डॉ० संगीता राय
अतिथि शिक्षक
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा।

उत्तरमेघ का कथानक :-

विरह विधुर यक्ष ने मेघदूत के पूर्वभाग में मेघ को पथ-निर्देश किया है। उत्तरमेघ में वही यक्ष अलका नगरी की प्रशंसा अपने भवन की पहचान तथा प्रिया को सन्देश देता है। यक्ष कहता है — हे मेघ! लीलालनाओं से अलंकृत, विचित्र चित्रों से चित्रित मृदंगों की मधुर ध्वनि से ध्वनित, मणिमय फर्श वाले भवन तुम्हारी समता करने में पूर्ण समर्थ है। वहाँ की रमणियों के हाथ में लीलाकमल, केशों में बाल-कुन्द पुष्प, जूड़े में कुरवक, कानों में शिरीष, सीमन्त में कदम्ब का फूल शोभित रहता है। अलका के उद्यान सदैव फूलों से बोझिल भौंरों की गुञ्जार से शोभित तथा मयूरों के कूजन से ~~शुभ~~ सुशोभित रहते हैं। वहाँ देवताओं के द्वारा प्रार्थित कन्यायें गंगा के सैकत पुलिन पर मणियाँ छिपाकर खेला करती हैं। वहाँ के वैभ्राज नामक उद्यान में कामीजन अप्सराओं के साथ सम्भोगरत रहते हैं। वहाँ का कल्पवृक्ष स्त्रियों की सम्पूर्ण प्रसाधन सामग्री प्रदान करता है। इस प्रकार अलका की प्रशंसा करने के पश्चात् अपने भवन की पहचान बताता है यक्ष कहता है —

हे मेघ! अलकापुरी में कुबेर के भवन की उत्तर दिशा में, पड़ोस में ही मेरा

भवन है, जो इन्द्रधनुष के समान तोरण से सुशोभित है। इसके पार्श्व में ही पुत्रवत् पालित बालमन्दार वृक्ष है जो सदैव पुष्पस्तबकों से बोझिल रहा करता है। भवन की बावली की सोपानपंक्ति मरकत-मणियों से जटित है। उसमें सदैव स्वर्णकमल खिले रहते हैं। उसके पड़ोस में ही इन्द्रनील मणियों के शिखर वाला क्रीडापर्वत है। यह सुनहरी कदली की बाढ़ से घिरा हुआ है। यहीं पर माधवी लतामण्डप के समीप ही रक्ताशोक एवं मौलश्री का वृक्ष है। इन दोनों वृक्षों के मध्य में स्फटिक मणियों की फलक वाली गृहमयूर के बैठने के लिए एक वास यष्टि है जिस पर सान्ध्यवेला में तुम्हारा मित्र मयूर बैठा करता है तथा जिसे मेरी प्रिया सुन्दर ताल देकर नचाया करती है। किन्तु मेरी अनुपस्थिति में मेरा भवन शोभाहीन हो गया होगा। अब वह मेघ को उस मेरे घर में प्रवेश करके मेरी प्रिया को कैसे पहचानेगा तथा उसे क्या करना चाहिए — इसका निर्देश देता हुआ कहता है ——

हे मेघ। तुम हस्तिकलभ के समान छोटा रूप धारण करके उस क्रीडाशैल पर बैठकर के अपने विद्युत् रूपी नेत्रों से भवन के अन्दर झांकना, तो तुम्हें पक्वबिम्बाफल के सदृश ओठों वाली, पतली कटि प्रदेश वाली, चकित मृगी के तुल्य नेत्रों वाली, नुकीले दांतों वाली, अल्पमञ्जु-भाषिणी मेरी प्रिया दिखाई देगी। मेरे वियोग में वह कुम्हलाई कमलिनी सी, रोने के कारण सूजे नेत्रों वाली गर्म आहों से मलिन ओठों वाली, बिखरे बालों वाली अपनी भाभी को देखना। सम्भव है - वह पूजारत हो अथवा मेरा चित्र बना रही हो, या पिञ्जरस्थ सारिका से मेरे विषय में चर्चा कर रही हो अथवा विपञ्ची को गोद में रखकर मेरो नाम वाले गीत को गाती हो, अथवा मेरे शाप के शेष

महीनों की देहली पर रखे पुष्पों से गणना करती हुई उसे तुम देखोगे।

हे मेघ! मेरी प्रिया दिन की अपेक्षा रात्रि में अत्यधिक विरहाकुल होती होगी। वह उद्विग्न अवस्था में पड़ी होगी तथा मेरे संयोग काल की अतीत स्मृतियाँ उसे और भी दीन बना रही होंगी। ऐसी अवस्था में उसे देखकर तुम्हारे आंसुओं का आ जाना स्वाभाविक है। आगे वह कहता है - यदि उसे नींद आ गई हो तो तुम थोड़ी देर प्रतीक्षा कर लेना क्योंकि संभवतः स्वप्न में उपलब्ध मेरे संयोग से वह वंचित न हो जाय। पुनश्च अपने जलकणों के संयोग से शीतल पवन से जगाकर उसे इस प्रकार संदेश देना —

हे सौभाग्यवति! मुझे अपने पति का मित्र समझो और मैं उन्हीं का सन्देश लेकर तुम्हारे समीप आया हूँ। हे अबले! तुम्हारा पति रामगिरि पर्वत पर जीवित है तथा तुम्हारा कुशल समाचार पूछते हुए मेरे द्वारा उसने निम्न संदेश भेजा है —

यक्ष का कहना है कि हे प्रिये! मैं प्रियंगु लताओं में तुम्हारे शरीर की, हरिणी में नेत्रों की, चन्द्रमा में मुखकान्ति की, मयूर-पिच्छ में केश कलाप की, नदियों की ऊर्मियों में तुम्हारे भ्रूभंगों की समानता देखता हूँ, किन्तु खेद इस बात का है कि ये सभी समानताएँ एकत्र नहीं मिलती है। मैं एक शिला पर गेरु से प्रणयकुपिता तुम्हारा चित्र बनाकर जैसे ही मानभंग के लिए चरणों में पड़ना चाहता हूँ ~~के~~ तो आंखों में आंसू आ जाते हैं, दृष्टि अवरुद्ध

हो जाती है, ऐसा प्रतीत होता है कि क्रूर विधाता इस रूप में भी हमारे संगम को सहन नहीं करता। मैं तुम्हारे वियोग से इतना व्यथित होने पर भी जैसे तैसे अपने को संभाले हुए तुमसे कह रहा हूँ कि तुम अधीर मत होना क्योंकि सुख एवं दुःख सदैव समान नहीं रहते। शाप के शेष महीनों को आंख बन्द करके काट लो। इसके पश्चात् विमल शरत् चन्द्रिका की रमणीय रात्रियों में अपनी अभिलाषाओं की पूर्ण परितुष्टि करेंगे। इसके आगे वह अपने व्यक्तिगत जीवन की याद दिलाता हुआ, मेघ का प्रिया वियोग न हो - यह शुभकामना अर्पित करता है तथा प्रतिसन्देश यक्षिणी के पास से लौटकर देने की प्रार्थना करता है।

—x—